बसना (BSNA) की जन्म कहानी
(The Story of BSNA)

हरि शर्मा, फ्रीहोल्ड (न्यू जर्सी)

सुनो सुनो ऐ ब्राह्मण लोगो बसना की ये जन्म कहानी ।
ये संस्था है जिसने ब्राह्मण वेल्यू फैलाने की ठानी ॥ सुनो सुनो . . .

उन्नीस सौ साठ से पहले जो ब्राह्मण अमरीका आते थे ।
पूरी करके अपनी पढाई वापस देश लौट जाते थे ॥
डॉक्टर, साइंटिस्ट या इंजीनियर की डिग्री सबने पाई ।
पर अमरीका बसने की इच्छा नहीं उनके मन में आई ॥
भोजन स्वयं पका करके ही पेट वे अपना भरते थे ।
शाकाहारी होने के कारण मैक्डानल्ड से डरते थे ॥
भारत में फॉरेन की डिग्री प्रेस्टिज की थी एक निशानी ।
सुनो सुनो ऐ ब्राह्मण लोगो बसना की ये जन्म कहानी ॥

सन अडसठ में अमरीका ने वीसा पालिसी सरल कराई ।
ग्रीन-कार्ड ले भारत की एक फौज यहाँ पे दौडी आई ॥
इनमें काफी संख्या में शिक्षित ब्राह्मण भी शामिल थे ।
बहुत से इनमें पी-एच.डी. और अपने विषय में काबिल थे ॥
इनमें और पहले वालों में एक फर्क था देखने वाला ।
यू. एस. नागरिक बनके इन्होंने मांग लिया था देश निकाला ॥
अब इस देश में बन के रह गये केवल नाम के हिन्दुस्तानी ।
सुनो सुनो ऐ ब्राह्मण लोगो बसना की ये जन्म कहानी ।।

उन्नीस सौ उन्यासी में ब्राह्मणों ने मिलकर यह योजना बनाई ।
जब श्रीकान्त मिश्रा जी ने वैदिक पद्धति से शादी करवाई ॥
ब्राह्मण एसोसियेशन स्थापित करने का एक अच्छा सा प्लान बनाया ।
लेकिन पचीस से ज्यादा ब्राह्मणों ने कोई इंटरेस्ट नहीं दिखाया ॥
उन्नीस सौ नब्बे आते तक इमिग्रेण्ट्स के बच्चे बडे हो गये ।
ऊँची शिक्षा पाकर वे अपने पाँवों पर खडे हो गये ॥
तब ब्राह्मण पैरेण्ट्स के दिल में एक चिन्ता सी जाग उठी ।
बच्चों को भारतीय संस्कृति सिखलाने की मांग उठी ॥
बिन ब्राह्मण वेल्यू के ब्राह्मण जाति बन जाती अज्ञानी ।
सुनो सुनो ऐ ब्राह्मण लोगो बसना की ये जन्म कहानी ॥

डॉक्टर एस. एन शुक्ला ने ब्राह्मणों की एक डायरेक्टरी बनाई ।
निर्मलेन्दु चौबे ने इसमें अपनी लिस्ट शामिल करवाई ॥

उन्नीस सौ चौरान्बे में मिलके बसना का स्थापन करवाया ।
एक सौ आठ ब्राह्मणों के नाम और एड्रेस छपवाया ॥
चौबे जी की प्रेसीडेन्सी में ब्राह्मण समाज उभरने लगा ।
शुक्ल पक्ष के चॉद के माफिक दिन पर दिन वो बढने लगा ॥
उन्नीस सौ पंचान्बे में पहला कन्वेन्सन का प्लान बनाया ।
एलेनटाउन पेन्सिलवेनिया ने होस्ट बनने का सौभाग्य उठाया ॥
ब्राह्मन्स ऑफ ट्वेन्टीफर्स्ट सेन्चुरी, कन्वेन्शन में थीम थी मानी ।
सुनो सुनो ऐ ब्राह्मण लोगो बसना की ये जन्म कहानी ॥

दो हजार में दुर्भाग्य से ब्राह्मण समाज में फूट पडी ।
एकता की जो डोर बंधी थी झटके से वो टूट पडी ॥
चौबे जी ने रिजाइन करके बसना से मुँह मोड लिया ।
एक नया फेडरेशन रच के ब्राह्मणों का दिल तोड दिया ॥
फिर भी बाकी बसना में रह गये थे मेम्बर बहुत जने ।
दो हजार एक में एस. एन. शुक्ला जी प्रधान बने ॥
इनकी लीडरशिप में बसना ने ब्राह्मणत्व पर जोर दिया ।
ब्राह्मण वेल्यू को ला कर के मुख्य पृष्ठ पर छोड दिया ॥
ब्राह्मण लोगों की खातिर दी बहुत बडी कुरबानी ।
सुनो सुनो ऐ ब्राह्मण लोगो बसना की ये जन्म कहानी ॥

And the story continues –

दो हजार चार में न्यू जर्सी में दसवाँ अधिवेशन करवाया ।
उमेश शुक्ल ने पॉजिटिव बैलेन्स दिखा के इसको सफल बनाया ॥
दो हजार पॉच का ये कन्वेन्शन हम इसलिये हैं लाए ।
'ब्राह्मणत्व' का अर्थ है क्या और हम सब इसको क्यूँ अपनाएँ ॥
बसना के नेतृत्व की कीर्ति देश विदेश ने भी है मानी ।
सुनो सुनो ऐ ब्राह्मण लोगो बसना की ये जन्म कहानी ॥